



ताजिक वर्षफल रिपोर्ट

इस जन्मदिन से अगले जन्मदिन तक ~ पूरे वर्ष का फल

श्री अभय शर्मा (काल्पनिक) जी हेतु व्यक्तिगत रिपोर्ट

नाम	अभय शर्मा (काल्पनिक)
जन्म तिथि व समय	12 जुलाई 1992 • 09:45
जन्म स्थान	जयपुर
लग्न • राशि • नक्षत्र	सिंह • वृश्चिक • ज्येष्ठा
वर्तमान दशा	सूर्य महादशा (2023–2029)
रिपोर्ट तिथि	24 सितम्बर 2026 • प्रातः 8:03

॥ पारस वाणी ॥

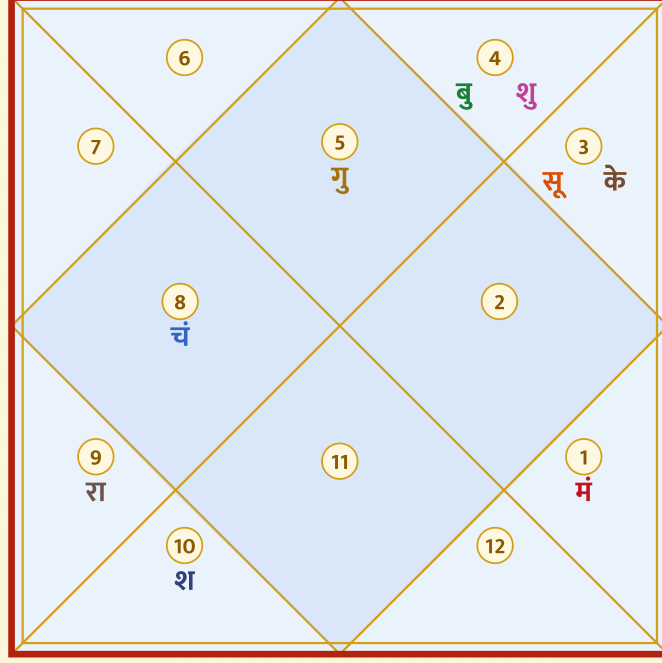
parasvani • वैदिक ज्ञान, आधुनिक तकनीक

यह रिपोर्ट खगोलीय Swiss Ephemeris (लाहिरी अयनांश) गणना पर आधारित है



जन्म कुंडली — ग्रह स्थिति एवं प्रभाव

कुंडली परिचय



जन्म-कुंडली (उत्तर भारतीय पद्धति) • लाहिरी अयनांश

ग्रह	राशि	भाव	क्षेत्र-प्रभाव
सूर्य	मिथुन	11	आत्मबल व प्रतिष्ठा — लाभ व आय
चंद्र	वृश्चिक	4	मन व भावनाएँ — सुख व माता
मंगल	मेष	9	ऊर्जा व साहस — भाग्य व धर्म
बुध	कर्क	12	बुद्धि व व्यापार — व्यय व अध्यात्म
गुरु	सिंह	1	ज्ञान व भाग्य — व्यक्तित्व व स्वास्थ्य
शुक्र	कर्क	12	सुख व कला — व्यय व अध्यात्म
शनि (वक्री)	मकर	6	कर्म व अनुशासन — सेवा व प्रतिस्पर्धा
राहु (वक्री)	धनु	5	महत्वाकांक्षा व नवाचार — बुद्धि व संतान
केतु (वक्री)	मिथुन	11	अध्यात्म व मोक्ष — लाभ व आय

वर्ष-प्रवेश कुंडली — 35वाँ संवत्सर

ता जि क वर्ष फल • सौ र वा प सी

वर्ष-प्रवेश विवरण

वर्ष-प्रवेश क्षण

13 जुलाई 2026, 02:51:03 IST

वर्ष अवधि

13 जुलाई 2026 — 13 जुलाई 2027

वर्ष-लग्न

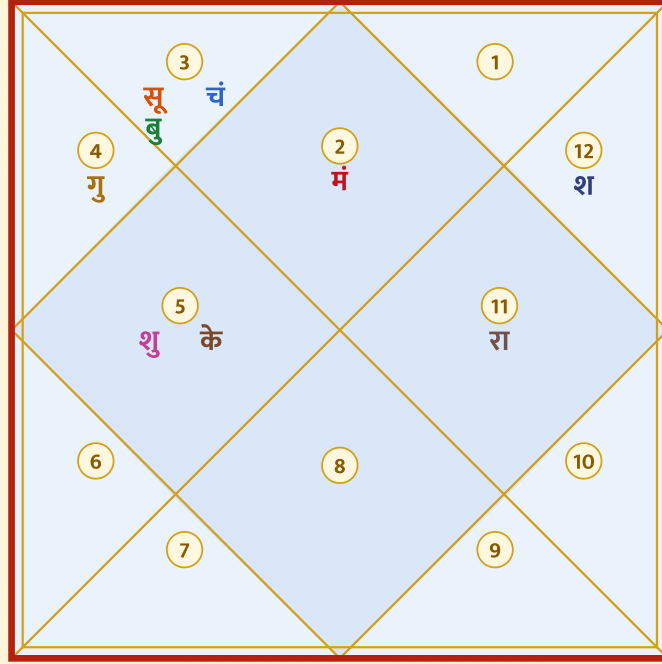
वृषभ 16°03'

मुंथा

मिथुन राशि — 2वें भाव में (मुंथा-पति बुध)

वर्षेश्वर (वर्ष का राजा)

बुध • प्रवेश रात्रि में



वर्ष-कुंडली (उत्तर भारतीय) • मुंथा ★ = मिथुन, भाव 2

वर्ष-कुंडली — ग्रह स्थिति एवं वर्षेश्वर

वर्ष - प्रवेश क्षण की गणना

ग्रह	राशि — अंश	नक्षत्र	वर्ष-भाव	टिप्पणी
सूर्य	मिथुन 26°19'	पुनर्वसु	2	—
चंद्र	मिथुन 4°52'	मृगशिरा	2	—

मंगल	वृषभ 15°43'	रोहिणी	1	—
बुध (व)	मिथुन 26°35'	पुनर्वसु	2	स्वराशि, वक्री
गुरु	कर्क 8°31'	पुष्य	3	उच्च
शुक्र	सिंह 9°17'	मघा	4	—
शनि	मीन 20°21'	रेवती	11	—
राहु (व)	कुम्भ 7°44'	शतभिषा	10	वक्री
केतु (व)	सिंह 7°44'	मघा	4	वक्री

वर्षेश्वर-निर्णय — पाँच दावेदारों का बल

दावेदार	दावा	स्थिति	बल-कारण	अंक
बुध ◀ वर्षेश्वर	मुंथा-पति	मिथुन · भाव 2	स्वराशि, वक्री	3
शुक्र	वर्ष-लग्नेश	सिंह · भाव 4	केंद्र में	1
चंद्र	त्रिराशि-पति + रात्रि-पति	मिथुन · भाव 2	—	1
सूर्य	जन्म-लग्नेश	मिथुन · भाव 2	—	0



मुद्दा दशा — वर्ष की मासिक धड़कन

विं शो त्ती रे अ नु पा त्ती · वर् ष - भ र की स म य - रे खा

मुद्दा दशा	से	तक
मंगल मुद्दा	13 जुलाई 2026	15 जुलाई 2026
राहु मुद्दा	15 जुलाई 2026	8 सितम्बर 2026
गुरु मुद्दा ◀ वर्तमान	8 सितम्बर 2026	27 अक्टूबर 2026
शनि मुद्दा	27 अक्टूबर 2026	24 दिसम्बर 2026
बुध मुद्दा	24 दिसम्बर 2026	14 फ़रवरी 2027
केतु मुद्दा	14 फ़रवरी 2027	7 मार्च 2027
शुक्र मुद्दा	7 मार्च 2027	7 मई 2027

सूर्य मुद्दा	7 मई 2027	25 मई 2027
चंद्र मुद्दा	25 मई 2027	24 जून 2027
मंगल मुद्दा	24 जून 2027	13 जुलाई 2027

~ ♦ ~

ग्रह-बल ~ पंचवर्गीय (विंशोपक) व हर्ष बल

ता जि क का अ प ना ब ल - ग णि त ~ क्षे त्र + उ च्च + ह द्वा + द्रै ष्का ण + न वां श

ग्रह	स्थान	वर्ष-भाव	विंशोपक (20)	राय	हद्दा-स्वामी	हर्ष (20)	दशा
सूर्य	मिथुन 26°18'	2	5.69	साधारण	शनि	5	
चंद्र	मिथुन 4°52'	2	11.3	बली	बुध	5	
मंगल	वृषभ 15°42'	1	6.38	साधारण	गुरु	5	
बुध	मिथुन 26°34'	2	12.51	बली	शनि	10	वक्री अस्त
गुरु	कर्क 8°30'	3	10.53	बली	शुक्र	5	
शुक्र	सिंह 9°17'	4	6.95	साधारण	शुक्र	5	
शनि	मीन 20°21'	11	4.73	निर्बल	मंगल	0	

ताजिक योग ~ दीप्तांश की कक्षा में बने सम्बन्ध

योग	जोड़ी	फल
पूर्ण इत्थशाल	सूर्य-बुध	काम बनते-बनते ठीक इसी समय पर है
गैरकंबूल		सूर्य-बुध का इत्थशाल है पर चंद्र का साथ नहीं — काम बनेगा, मन नहीं लगेगा
रद्द		सूर्य-बुध का इत्थशाल है पर एक ग्रह वक्री — काम बनते-बनते पलटेगा
कुत्थ		सूर्य-बुध का योग अस्त ग्रह के कारण दबा हुआ
दुरुफ		बुध अस्त — इससे जुड़े काम इस वर्ष दबे रहेंगे

सहम ~ वर्ष के संवेदनशील बिंदु

ता जिक के 35 सहम ~ किस बात का बिंदु वर्ष - कुंडली के किस भाव में गिरा

सहम	स्थान	वर्ष-भाव	स्वामी	किस बात का
पुण्य	कर्क 7°29'	3	चंद्र	भाग्य, पुण्य, सुख — वर्ष की रीढ़
विद्या	मेष 24°36'	12	मंगल	पढ़ाई, बुद्धि, सीखना
यश	वृषभ 15°01'	1	शुक्र	नाम, प्रतिष्ठा
मित्र	कन्या 10°18'	5	बुध	मित्र, साथ देने वाले
महात्म्य	मेष 24°16'	12	मंगल	बड़प्पन, प्रभाव
आशा	सिंह 11°24'	4	सूर्य	इच्छा, चाह
सामर्थ्य	सिंह 9°37'	4	सूर्य	क्षमता, दम
भ्रातृ	कन्या 4°12'	5	बुध	भाई-बहन
गौरव	वृषभ 22°40'	1	शुक्र	आदर, सम्मान
पितृ	सिंह 22°00'	4	सूर्य	पिता
राज	सिंह 22°00'	4	सूर्य	सत्ता, अधिकार, सरकारी काम
मातृ	सिंह 20°27'	4	सूर्य	माता
पुत्र	मेष 12°24'	12	मंगल	संतान
जीव	कन्या 4°12'	5	बुध	प्राण-शक्ति, आयु-बल
कर्म	मिथुन 26°55'	2	बुध	काम-धंधा, नौकरी
रोग	मिथुन 4°52'	2	बुध	बीमारी
कलि	मेष 23°14'	12	मंगल	झगड़ा, विवाद
शास्त्र	मेष 8°25'	12	मंगल	शास्त्र-ज्ञान, गहरी विद्या
बंधु	मेष 24°20'	12	मंगल	रिश्तेदार
मृत्यु	वृश्चिक 4°52'	7	मंगल	आयु-संकट (सावधानी के लिए, डराने के लिए नहीं)
परदेश	सिंह 20°21'	4	सूर्य	विदेश, लंबी यात्रा

अर्थ	मिथुन 26°34'	2	बुध	धन
परदार	मेष 3°04'	12	मंगल	सम्बन्धों में भटकाव
वणिक	कर्क 7°45'	3	चंद्र	व्यापार-लेन-देन
कार्यसिद्धि	तुला 2°32'	6	शुक्र	काम का पूरा होना
विवाह	मकर 27°07'	9	शनि	विवाह
संताप	मकर 0°34'	9	शनि	मन का दुख
श्रद्धा	मीन 22°28'	11	गुरु	श्रद्धा, भक्ति
प्रीति	सिंह 15°06'	4	सूर्य	प्रेम, स्नेह
जाड्य	वृषभ 1°13'	1	शुक्र	पुराना/जड़ रोग
व्यापार	सिंह 11°24'	4	सूर्य	कारोबार
शत्रु	मीन 20°41'	11	गुरु	विरोधी
जलपतन	कुंभ 21°24'	10	शनि	जल-यात्रा का भय
बंधन	कुंभ 28°55'	10	शनि	बंधन, रुकावट
अपमृत्यु	वृश्चिक 15°42'	7	मंगल	दुर्घटना से बचाव

विंशोत्तरी दशा — अंतर्दशा तालिकाएँ

अ भी च ल र ही व अ ग ली म हा द शा • वर्तमान ◀ चिह्न से

सूर्य महादशा ◀

19/04/2023 – 19/04/2029

अंतर्दशा	से	तक
सूर्य	19/04/2023	07/08/2023
चंद्र	07/08/2023	06/02/2024
मंगल	06/02/2024	12/06/2024
राहु	12/06/2024	07/05/2025
गुरु	07/05/2025	23/02/2026
शनि ◀	23/02/2026	05/02/2027
बुध	05/02/2027	13/12/2027
केतु	13/12/2027	19/04/2028
शुक्र	19/04/2028	19/04/2029

चंद्र महादशा

19/04/2029 – 19/04/2039

अंतर्दशा	से	तक
चंद्र	19/04/2029	17/02/2030
मंगल	17/02/2030	18/09/2030
राहु	18/09/2030	19/03/2032
गुरु	19/03/2032	19/07/2033
शनि	19/07/2033	17/02/2035
बुध	17/02/2035	19/07/2036
केतु	19/07/2036	17/02/2037
शुक्र	17/02/2037	19/10/2038
सूर्य	19/10/2038	19/04/2039

योगिनी दशा — अंतर-योगिनी तालिकाएँ

अ भी च ल र ही व अ ग ली यो गि नी • वर्तमान ◀ चिह्न से

भद्रिका योगिनी ◀

स्वामी बुध • 5 वर्ष • 20/08/2024 – 20/08/2029

अंतर-योगिनी	से	तक
भद्रिका	20/08/2024	01/05/2025
उल्का	01/05/2025	01/03/2026
सिद्धा ◀	01/03/2026	19/02/2027
संकटा	19/02/2027	31/03/2028
मंगला	31/03/2028	21/05/2028
पिंगला	21/05/2028	30/08/2028
धान्या	30/08/2028	30/01/2029
भ्रामरी	30/01/2029	20/08/2029

उल्का योगिनी

स्वामी शनि • 6 वर्ष • 20/08/2029 – 21/08/2035

अंतर-योगिनी	से	तक
उल्का	20/08/2029	21/08/2030
सिद्धा	21/08/2030	21/10/2031
संकटा	21/10/2031	19/02/2033
मंगला	19/02/2033	21/04/2033
पिंगला	21/04/2033	20/08/2033
धान्या	20/08/2033	19/02/2034
भ्रामरी	19/02/2034	21/10/2034
भद्रिका	21/10/2034	21/08/2035



वर्षफल परिचय ~ यह वर्ष कहाँ से कहाँ तक

अ ध्या य 1

वर्षफल परिचय ~ यह वर्ष कहाँ से कहाँ तक

अभय शर्मा जी, आपका 35वाँ व्यक्तिगत वर्ष **13 जुलाई 2026 से 13 जुलाई 2027 तक** चलेगा — और इस वर्ष की कुंडली का पहला संदेश यही है कि यह वर्ष दिखने में सरल नहीं, भीतर से बहुत गहरा है। बुद्धि, वाणी और धन की धुरी पर यह वर्ष घूमेगा — पर यह धुरी एक साथ संभावना और सावधानी, दोनों लेकर आई है।

वर्ष-लग्न व वर्षेश्वर — इस वर्ष का नायक कौन?

इस वर्ष का लग्न **वृषभ** है — धरती की राशि, धैर्य और दीर्घकालिक निर्माण की राशि। वर्ष-लग्नेश **शुक्र** हैं जो वर्ष-कुंडली के चतुर्थ भाव (सिंह राशि) में बैठे हैं — यानी इस वर्ष घर, परिवार, मानसिक सुख और भावनात्मक स्थिरता का प्रश्न केंद्र में रहेगा। पर इस वर्ष का असली नायक — **वर्षेश्वर बुध** हैं। पाँचों दावेदारों में सर्वाधिक बल-अंक (3) लेकर बुध ने यह पद जीता है। बुध स्वराशि मिथुन में वर्ष-भाव 2 में बैठे हैं — धन, वाणी और लेन-देन का भाव। **विंशोपक बल 12.51 (बली)** है, पर बुध वक्री और अस्त दोनों हैं — अर्थात् शक्ति है, पर उसका प्रकाश इस वर्ष पूरी तरह बाहर नहीं आ पाएगा।

मुंथा — इस वर्ष की धड़कन कहाँ है?

मुंथा मिथुन राशि में, वर्ष-भाव 2 में है — और मुंथापति भी **बुध** हैं। ताजिक परंपरा में मुंथा वह संवेदनशील बिंदु है जो बताता है कि इस वर्ष जीवन-ऊर्जा किस क्षेत्र पर केंद्रित रहेगी। भाव 2 अर्थात् धन, वाणी, परिवार और संचय — यह वर्ष इन्हीं विषयों पर आपसे सबसे अधिक माँगेगा और इन्हीं में सबसे बड़ा फल भी देगा। मुंथा का वर्षेश्वर के साथ एक ही भाव में होना इस केंद्रबिंदु को और पक्का करता है।

ताजिक योग — यह वर्ष क्या कहता है?

इस वर्ष का सबसे महत्वपूर्ण ताजिक योग **सूर्य-बुध का पूर्ण इत्थशाल** है — मात्र 0.27° के अंतर पर, अर्थात् कार्य-सिद्धि की संभावना ठीक इसी समय-बिंदु पर खड़ी है। किंतु इसी के साथ तीन और योग एक साथ बने हैं: **गैरकंबूल** (चंद्र का साथ नहीं — मन नहीं लगेगा), **रह** (बुध वक्री होने से काम बनते-बनते पलट सकता है), और **कुत्थ** (बुध अस्त होने से काम दबा रहेगा)। **दुरुफ योग** भी है — बुध से जुड़े

सभी काम इस वर्ष दबे या विलंबित रहेंगे। यह संदेश स्पष्ट है: संभावना बड़ी है, पर मार्ग सीधा नहीं।

मुख्य बातें

- **वर्षेश्वर बुध** — बली पर वक्री-अस्त; बुद्धि, वाणी व व्यापार केंद्र में, पर परिणाम विलंबित
- **मुंथा भाव 2 में** — धन, वाणी व परिवार इस वर्ष की मुख्य धुरी
- **इत्थशाल योग** है पर साथ में **रद्द व गैरकंबूल** — काम बनेगा, पर आसानी से नहीं
- **वर्ष-लग्नेश शुक्र** चतुर्थ भाव में — घर व मानसिक सुख पर ध्यान आवश्यक
- यह वर्ष धैर्य, विवेक और वाणी-संयम का वर्ष है — **जल्दबाज़ी इस वर्ष सबसे बड़ा शत्रु है**

॥ शास्त्र-प्रमाण ॥

एकोऽपि ज्ञार्यशुक्राणां लग्नात् केन्द्रगतो यदि ।

अरिष्टं निखिलं हन्ति तिमिरं भास्करो यथा ॥

बुध, गुरु या शुक्र में से एक भी लग्न से केन्द्र में हो, तो वह सारे अरिष्ट को वैसे मिटा देता है जैसे सूर्य अंधकार को।

— बृहत् पाराशर होरा शास्त्र, अध्याय १०



वर्षेश्वर व ग्रह-बल ~ यह वर्ष किसके हाथ में है

अ ध्या य 2

वर्षेश्वर व ग्रह-बल ~ यह वर्ष किसके हाथ में है

अभय शर्मा जी, आपका यह 35वाँ वर्ष **बुध के हाथ में** है। वर्षेश्वर के रूप में बुध ने इस वर्ष की बागडोर संभाली है — और यह ग्रह जहाँ बुद्धि, वाणी, लेखन व व्यापार का स्वामी है, वहीं इस वर्ष इसकी स्थिति जटिल भी है। समझ लीजिए कि यह वर्ष उतना सीधा नहीं जितना पहली नज़र में लगता है — पर जो समझ जाए, उसके लिए इसमें बहुत कुछ है।

वर्षेश्वर बुध — क्यों और कैसे

ताजिक पद्धति में वर्षेश्वर वह ग्रह होता है जिसके हाथ में पूरे वर्ष की कुंजी होती है। पाँच दावेदारों में से जो सबसे बलवान हो, वही वर्षेश्वर बनता है। यहाँ मुंथा (वर्ष का संवेदनशील बिंदु) मिथुन राशि में वर्ष-कुंडली के दूसरे भाव में पड़ी है, और मुंथा-पति यानी उसका स्वामी बुध है। बुध स्वयं भी मिथुन राशि में — **अपनी ही राशि में** — वर्ष-कुंडली के दूसरे भाव में बैठा है।

पंचाधिकारी-बल की गणना में बुध को सर्वाधिक **3 अंक** मिले — मुंथा-पति होने का बल, स्वराशि का बल और वर्ष-प्रवेश के समय का बल मिलाकर। वर्षेश्वर बुध का **विंशोपक बल 12.51 है** — जो इस वर्ष-कुंडली में सबसे ऊँचा है। यह "बली" श्रेणी में आता है। इसका अर्थ है कि बुध के जो विषय हैं — वाणी, बुद्धि, लेखन, संवाद, व्यापार, हिसाब-किताब — वे इस वर्ष आगे बढ़ सकते हैं।

पर एक पेच है — वक्री और अस्त बुध

बुध इस वर्ष-कुंडली में एक साथ वक्री भी है और अस्त भी। ताजिक में यह स्थिति "दुरुफ" योग बनाती है — अर्थात् बुध से जुड़े काम इस वर्ष दबे रहेंगे, पूरी शक्ति से नहीं निकल पाएँगे।

वक्री ग्रह भीतर की ओर मुड़ता है — बाहर का विस्तार धीमा होता है, भीतरी चिंतन गहरा होता है। अस्त ग्रह सूर्य की रोशनी में छिप जाता है — उसकी आवाज़ दब जाती है। तो बुध के हाथ में वर्ष है, पर बुध स्वयं कुछ थका-सा, दबा-सा है।

इसका व्यावहारिक अर्थ: **जो बड़े निर्णय लेने हों, जो अनुबंध-संविदा (contracts) होने हों, जो बड़ी बात-चीत चलनी हो — उसमें पहली कोशिश में रुकावट आ सकती है।** पर यह "रुकावट" का अर्थ "बंद" नहीं है — बुध बलवान है, इसलिए रास्ता निकलता है, बस थोड़ा घुमावदार।

सूर्य-बुध का इत्थशाल — और उसका पलटना

इस वर्ष-कुंडली में **सूर्य और बुध के बीच पूर्ण इत्थशाल** बना है — दोनों के अंशों का अंतर मात्र 0.27° है, जो दीप्तांश-कक्षा के भीतर है। इत्थशाल का अर्थ होता है काम बनते-बनते ठीक इसी पड़ाव पर होना — दोनों ग्रह एक-दूसरे की ओर बढ़ रहे हैं।

पर यहाँ तीन बातें एक साथ घटती हैं जो इसे जटिल बनाती हैं:

- **गैरकंबूल** — सूर्य-बुध का इत्थशाल है, पर चंद्र का सहयोग नहीं। काम बनेगा, पर मन उसमें पूरी तरह नहीं लगेगा — एक भीतरी असंतोष बना रहेगा।
- **रद्द** — एक ग्रह वक्री है, इसलिए काम बनते-बनते पलट सकता है। जो तय लगे, वह टूट भी सकता है।
- **कुत्थ** — अस्त ग्रह के कारण यह योग और दबा हुआ है।

यह संयोग बताता है कि **इस वर्ष बड़े वादों पर भरोसा सँभलकर करें** — पहले लिखित में लें, मौखिक बात पर बड़े निर्णय न टिकाएँ।

चंद्र और गुरु — सहयोगी बल

वर्ष-कुंडली में **चंद्र का विंशोपक बल 11.30** है — यह भी "बली" है। चंद्र वर्ष-कुंडली के दूसरे भाव में है, और जन्म-कुंडली से गुरु के साथ गजकेसरी योग में भी है। गुरु उच्च के हैं — कर्क राशि में — वर्ष-कुंडली के तीसरे भाव में। गुरु का विंशोपक बल 10.53 है, जो "बली" है।

ये दोनों ग्रह — चंद्र और गुरु — इस वर्ष आपके मन व विवेक को सँभाले रखेंगे। **जहाँ बुध भटके, वहाँ गुरु राह दिखाएगा।** जहाँ मन अटके, वहाँ चंद्र की संवेदनशीलता काम आएगी।

मुख्य बातें

- **वर्षेश्वर बुध** है — विंशोपक बल 12.51, इस वर्ष का सबसे बलवान ग्रह; वाणी, बुद्धि, संवाद व व्यापार के विषय आगे बढ़ेंगे।
- **वक्री व अस्त बुध** के कारण यह बल दबा हुआ है — पहली कोशिश में काम पूरा नहीं होगा, धैर्य रखना होगा।
- **सूर्य-बुध इत्थशाल** बताता है कि काम बनने की स्थिति है, पर **रह व गैरकंबूल** योगों के कारण पलटाव व मन का अधूरापन साथ रहेगा।
- **गुरु उच्च के हैं** (कर्क, वर्ष-भाव 3) और **चंद्र भी बलवान** — ये दोनों इस वर्ष आपके भीतरी स्तंभ हैं।
- **शनि का विंशोपक बल 4.73 — निर्बल है** — इसलिए इस वर्ष शनि से जुड़े विषयों (नियमित काम, ज़िम्मेदारी, देरी) में अतिरिक्त परिश्रम लगेगा; शॉर्टकट से बचें।



मुंथा व वर्ष-लग्न ~ वर्ष की मुख्य दिशा

अ ध्या य 3

मुंथा व वर्ष-लग्न ~ वर्ष की मुख्य दिशा

अभय शर्मा जी, इस वर्ष आपकी ताजिक कुंडली का वर्ष-लग्न वृषभ है और मुंथा मिथुन राशि में — यानी वर्ष-कुंडली के दूसरे भाव में। **यह संयोग बताता है कि 35वाँ वर्ष मुख्यतः धन, वाणी, कुटुंब और आत्म-निर्माण के इर्द-गिर्द घूमेगा।**

वर्ष-लग्न वृषभ — आपकी इस वर्ष की पहचान

वृषभ लग्न धैर्य, स्थिरता और मेहनत से बनाई गई नींव का प्रतीक है। इस लग्न का स्वामी शुक्र है — वर्ष-लग्नेश के रूप में शुक्र वर्ष-कुंडली के **चौथे भाव (सिंह राशि) में** बैठे हैं। चतुर्थ भाव घर, मन की शांति और पारिवारिक जड़ों का भाव है। इसका सीधा अर्थ है — **इस वर्ष आपका मन घर और परिवार की ओर अधिक खिंचेगा**, बाहर की दौड़-भाग से कहीं अधिक।

शुक्र का विंशोपक बल 6.95 है — यह साधारण स्तर का बल है, न बहुत ऊँचा, न गिरा हुआ। इसका फल यह है कि वर्ष-लग्नेश अपना काम करेगा, पर पूरी ताकत से नहीं। घर-परिवार से जुड़ी बातें ठीक रहेंगी, पर कोई असाधारण उछाल नहीं आएगा — **नींव मज़बूत होती रहेगी, इमारत धीरे बनेगी।**

मुंथा मिथुन — दूसरे भाव में, बुद्धि और वाणी पर ज़ोर

ताजिक शास्त्र में मुंथा को "वर्ष का केंद्र-बिंदु" कहते हैं — जहाँ यह पड़ती है, उसी भाव का विषय इस वर्ष सबसे अधिक सक्रिय होता है। आपकी मुंथा इस वर्ष **मिथुन राशि में, वर्ष-कुंडली के दूसरे भाव में** है।

दूसरा भाव तीन चीज़ें एक साथ संभालता है — धन का आगमन-निर्गमन, वाणी व वचन और कुटुंब-सम्बंध। मिथुन राशि स्वयं बुद्धि, संवाद और लेन-देन की राशि है। **इसलिए इस वर्ष आपकी सबसे बड़ी शक्ति आपकी वाणी और बुद्धि है** — जो बात आप मुँह से कहेंगे, जो निर्णय आप सोच-समझकर लेंगे, वही आगे बढ़ाएगा।

मुंथापति (मुंथा के स्वामी) बुध हैं और वे वर्षेश्वर भी हैं — यानी इस वर्ष **एक ही ग्रह मुंथा और वर्ष दोनों को चला रहा है।** यह एकाग्रता एक ओर शक्ति है, दूसरी ओर इसका अर्थ है कि बुध की कमज़ोरी पूरे वर्ष पर असर डालेगी। बुध वक्री और अस्त हैं — इसलिए "दुरुफ योग" बना है, जिसका अर्थ है कि **इस वर्ष बुध से जुड़े सभी काम — लेखन, अनुबंध, व्यापार-वार्ता, शिक्षा — में देरी, उलट-फेर या अधूरापन रह सकता है।**

मुंथा का शुभ-अशुभ पक्ष — दोनों एक साथ

मुंथा दूसरे भाव में होना आमतौर पर धन की दृष्टि से अनुकूल माना जाता है। **कर्म सहम और अर्थ सहम दोनों मिथुन राशि के दूसरे भाव में हैं** — इसका अर्थ है कि इस वर्ष काम-धंधे और धन का बिंदु एक ही स्थान पर एकत्र हुआ है। जब प्रयास होगा, तो धन का मार्ग खुलेगा।

पर बुध की वक्री और अस्त स्थिति के कारण "रद्द योग" भी बना है — जिसका अर्थ है कि **बनते-बनते काम अटक सकते हैं।** कोई समझौता, कोई अनुबंध या कोई महत्वपूर्ण बात — उसे लिखित रूप में रखें, मौखिक पर निर्भर न रहें। जो काम अक्टूबर 2026 के बाद बुध की मुद्दा दशा (24 दिसम्बर से 14 फरवरी 2027) में होंगे, उनमें अधिक सँभलकर चलें।

मुख्य बातें

- **वर्ष-लग्न वृषभ और लग्नेश शुक्र चतुर्थ भाव में** — इस वर्ष परिवार, घर और मानसिक शांति सबसे बड़ी प्राथमिकता बनेगी।
- **मुंथा दूसरे भाव में** — धन और वाणी इस वर्ष का केंद्र-बिंदु हैं; जो बात सोच-समझकर कहेंगे वही काम आएगी।
- **मुंथापति और वर्षेश्वर दोनों बुध** — पूरे वर्ष की बागडोर एक ही ग्रह के हाथ में, इसलिए बुध की वक्री-अस्त स्थिति का असर गहरा है।
- **दुरुफ व रद्द योग** — लेखन, अनुबंध और व्यापारिक बातों में देरी व उलट-फेर संभव; लिखित दस्तावेज़ों पर ध्यान दें।
- अपनी **वाणी को संयमित और स्पष्ट रखें** — यही इस वर्ष का सबसे बड़ा उपाय है, और यही सबसे बड़ी शक्ति भी।



ताजिक योग ~ क्या बनेगा, क्या टलेगा

अ ध्या य 4

ताजिक योग ~ क्या बनेगा, क्या टलेगा

अभय शर्मा जी, इस वर्ष आपकी वर्ष-कुंडली में एक ही मुख्य ताजिक योग बना है — **सूर्य और बुध का पूर्ण इत्थशाल** — और यही एक योग चार अलग-अलग रूपों में टूटता भी है। इसे समझना इस पूरे वर्ष की असली कुंजी है।

इत्थशाल — काम बनते-बनते ठीक इसी मोड़ पर है

ताजिक में **इत्थशाल** का अर्थ है — दो ग्रह इतने पास हैं कि उनका काम अभी, इसी समय, पूरा होने की स्थिति में है। आपकी वर्ष-कुंडली में सूर्य (वर्ष-भाव 2, मिथुन 26°19') और बुध (वर्ष-भाव 2, मिथुन 26°35') के बीच अंतर मात्र **0.27°** है — यह संयोग असाधारण है। मध्य-दीप्तांश 11° के भीतर यह युति बनी है, इसलिए यह **पूर्ण इत्थशाल** है।

दोनों ग्रह वर्ष के दूसरे भाव में हैं — जो धन, वाणी, कुटुंब और आजीविका का भाव है। सूर्य यहाँ आत्मबल व पहचान देते हैं, बुध बुद्धि, संवाद व लेन-देन की शक्ति। इसका सीधा अर्थ है: **इस वर्ष आपकी वाणी, बुद्धि और संवाद-कौशल से कोई बड़ा काम बनने के करीब आएगा।** कोई बात, कोई प्रस्ताव, कोई निर्णय — जो आप बोलेंगे या लिखेंगे, वह सामने वाले तक पहुँचेगा।

पर यहीं से बात पेचीदा होती है।

गैरकंबूल — काम बनेगा, मन नहीं लगेगा

इत्थशाल तब **कंबूल** (पूर्ण सफल) होता है जब चंद्र उसमें भागीदार हो या उसे देखता हो। यहाँ चंद्र वर्ष-भाव 2 में तो है, पर वह इस इत्थशाल में भागीदार नहीं बन पाता — इसीलिए यह **गैरकंबूल** योग बनता है।

गैरकंबूल का सरल अर्थ: काम पूरा होगा, पर भीतर से संतोष नहीं मिलेगा। आप कोई बात मनवा लेंगे, कोई समझौता होगा, कोई निर्णय पास होगा — पर मन में यह भाव बना रहेगा कि "यह तो मेरे मन जैसा नहीं हुआ।" **यह वर्ष बाहर से सफलता और भीतर से बेचैनी का वर्ष हो सकता है** — दोनों एक साथ।

इसे दोष न समझिए। यह इस वर्ष का स्वभाव है — परिणाम मिलेगा, पर मनचाहा नहीं। इसी को जानकर चलेंगे तो निराशा कम होगी।

रद्द — बनते-बनते पलटने का खतरा

तीसरा योग और भी महत्वपूर्ण है — **रद्द**। यह तब बनता है जब इत्थशाल में शामिल कोई ग्रह वक्री हो। यहाँ बुध वर्ष-कुंडली में **वक्री** हैं।

रद्द का अर्थ है — काम लगभग बन जाता है, पर आखिरी क्षण में पलट जाता है। कोई हस्ताक्षर होते-होते रुक जाएँ, कोई निर्णय लिया जाए और फिर वापस लिया जाए, कोई बात तय हो और फिर उलझ जाए — यह इस वर्ष की एक बड़ी संभावना है। **विशेषकर बुध से जुड़े विषयों में — लिखित समझौते, व्यापारिक बातचीत, यात्रा की योजना, दस्तावेज़ — इन्हें पहली बार में पूरा न मान लें।**

रद्द से बचाव एक ही है — जब काम बनता दिखे, तब उसे पूरा कर लें, टालें नहीं। और जो काम पलट जाए, उसे तुरंत नए सिरे से न पकड़ें — थोड़ा ठहरकर देखें कि क्या कोई और रास्ता खुल रहा है।

कुत्थ और दुरुफ — दबा हुआ बल

चौथा और पाँचवाँ योग एक साथ देखें — **कुत्थ** और **दुरुफ**। बुध इस वर्ष-कुंडली में **अस्त** भी हैं (सूर्य के बहुत निकट होने से)। कुत्थ का अर्थ है — जो इत्थशाल बना है, वह अस्त ग्रह के कारण दबा हुआ है। दुरुफ का अर्थ है — बुध से जुड़े सारे काम इस वर्ष किसी न किसी दबाव में रहेंगे।

बुध इस कुंडली में वर्षेश्वर भी हैं — यानी वर्ष का मुखिया ही दबा हुआ है। यह एक संवेदनशील स्थिति है। **बुध के विषय — संवाद, लेखन, हिसाब-किताब, व्यापार, शिक्षा — इन सबमें इस वर्ष अधिक सतर्कता और अधिक मेहनत माँगी जाएगी।** परिणाम मिलेगा, पर आसानी से नहीं।

मुख्य बातें

- **इत्थशाल** (सूर्य-बुध, 0.27° अंतर) — इस वर्ष आपकी वाणी और बुद्धि से कोई बड़ा काम बनने की स्थिति बनेगी; संवाद और लेखन पर ध्यान दें
- **गैरकंबूल** — काम बाहर से पूरा होगा, भीतर से संतोष शायद कम मिले; इसे पहले से जानकर चलें तो निराशा नहीं होगी
- **रद्द** (बुध वक्री) — बनते-बनते काम पलटने का खतरा; **लिखित समझौते, दस्तावेज़ और बड़े निर्णय पहली बार में पूरे कर लें, टालें नहीं**
- **कुत्थ व दुरुफ** (बुध अस्त) — वर्षेश्वर का बल दबा हुआ है; बुध-विषयों में परिणाम देर से और मेहनत से आएगा
- इस वर्ष का सबसे बड़ा सबक: **जो काम बनता दिखे उसे उसी क्षण पूरा करें; जो पलट जाए उसे ज़बरदस्ती न खींचें** — यही इन पाँचों योगों का मिला-जुला संदेश है

सहम ~ वर्ष के संवेदनशील बिंदु

अ ध्या य 5

सहम ~ वर्ष के संवेदनशील बिंदु

अभय शर्मा जी, ताजिक पद्धति में "सहम" वे संवेदनशील बिंदु होते हैं जो बताते हैं कि इस वर्ष आपके जीवन के किस क्षेत्र में ऊर्जा सबसे अधिक केंद्रित है — कहाँ फल मिलने की संभावना है, कहाँ सँभलकर चलना है। इस वर्ष **धन, घर व चौथे भाव से जुड़े सहम सबसे अधिक सक्रिय हैं**, जबकि **बारहवें भाव के सहम बताते हैं कि कुछ चीज़ें अभी पृष्ठभूमि में ही रहेंगी।**

यश और गौरव — नाम इस वर्ष बनेगा

यश सहम वर्ष-लग्न (वृषभ) में है, और गौरव सहम भी वर्ष-भाव 1 में — दोनों के स्वामी शुक्र हैं, जो स्वयं वर्ष-लग्नेश भी हैं और वर्ष-भाव 4 (केंद्र) में विराजमान हैं। इसका अर्थ साफ़ है — इस वर्ष आपकी पहचान, आपका नाम और आपके काम की प्रतिष्ठा सामने आने का स्वाभाविक समय है।

शुक्र का विंशोपक बल 6.95 है — साधारण, पर हर्ष भी 5 है। अर्थात फल मिलेगा, पर उसके लिए खुद को आगे रखना होगा; बैठे-बैठे नाम नहीं होगा। **जब भी इस वर्ष आपको कोई मंच मिले — चाहे काम का, चाहे समाज का — उसे छोड़िए मत।** यही यश और गौरव सहम की माँग है।

धन, वाणी और कर्म — दूसरे भाव की भीड़

इस वर्ष की वर्ष-कुंडली के दूसरे भाव में **सूर्य, चंद्र, बुध — तीन ग्रह एक साथ** हैं। इसी भाव में **कर्म सहम, अर्थ सहम और रोग सहम** भी आ गए हैं — तीनों के स्वामी बुध हैं, जो इस वर्ष के वर्षेश्वर भी हैं।

• **कर्म सहम (मिथुन 26°55')** — आपका काम-धंधा और नौकरी इस वर्ष सीधे वाणी, लेखन और बुद्धि से जुड़ी बात से आगे बढ़ेगी। जो बोलेंगे, जो लिखेंगे — वही आपका कर्म-फल तय करेगा।

• **अर्थ सहम (मिथुन 26°34')** — धन का मार्ग भी इसी दिशा से खुलेगा। बुध के वर्षेश्वर होने से और अर्थ सहम का उनसे जुड़ा होना — दोनों मिलकर कह रहे हैं कि **बुद्धि व संवाद से धन आएगा, मेहनत-मज़दूरी से नहीं।**

• **रोग सहम (मिथुन 4°52')** — यह भी दूसरे भाव में है। इसका अर्थ यह नहीं कि बीमारी आएगी, पर **वाणी, गले व पाचन का ध्यान रखें** — ये दूसरे भाव के नैसर्गिक विषय हैं। बुध अस्त और वक्री भी हैं, इसलिए इस वर्ष तनाव का असर सबसे पहले इन्हीं पर पड़ सकता है।

चौथा भाव — घर, मन और परिवार का केंद्र

वर्ष-कुंडली में चौथे भाव में शुक्र और केतु बैठे हैं — और **आशा सहम, सामर्थ्य सहम, पितृ सहम, राज सहम, मातृ सहम, प्रीति सहम, व्यापार सहम और परदेश सहम** — आठ सहम एक साथ इसी भाव में हैं। इतने सहम एक भाव में इकट्ठे होना बताता है कि **इस वर्ष घर, परिवार और मन की दशा ही सब कुछ तय करेगी।**

- **आशा व सामर्थ्य सहम** — दोनों के स्वामी सूर्य हैं। सूर्य इस वर्ष दूसरे भाव में हैं और षड्बल में बलवान हैं (9.86 रूप), पर अवस्था मृत है — अर्थात् भीतर क्षमता है, पर उसे जगाना होगा। इच्छाशक्ति और आत्म-विश्वास को सक्रिय रखना इस वर्ष का सबसे बड़ा काम है।

- **मातृ व पितृ सहम** — माता-पिता से जुड़ा कोई महत्वपूर्ण प्रसंग इस वर्ष घर में आ सकता है। शुक्र केंद्र में हैं — यह शुभ है; पर केतु का साथ होना कहता है कि **पारिवारिक रिश्तों में अचानक कोई बात निकले तो घबराइए नहीं, धैर्य से सँभालिए।**

- **परदेश सहम** — इस वर्ष लंबी यात्रा या किसी नए स्थान की ओर आकर्षण हो सकता है। इसके स्वामी सूर्य हैं — और सूर्य की मुद्दा दशा 7 मई से 25 मई 2027 के बीच आएगी; उस अवधि में यह विषय सबसे प्रबल होगा।

बारहवाँ भाव — जो इस वर्ष पृष्ठभूमि में रहेगा

विद्या सहम, महात्म्य सहम, पुत्र सहम, कलि सहम, शास्त्र सहम, बंधु सहम और परदार सहम — सब बारहवें भाव में हैं, जिनके स्वामी मंगल हैं।

बारहवाँ भाव व्यय, एकांत और परदे के पीछे का भाव है। मंगल का विंशोपक बल 6.38 है — साधारण। इसका अर्थ:

- **गहरी पढ़ाई या शास्त्र-अध्ययन** इस वर्ष सार्वजनिक रूप से नहीं, एकांत में होगा — और वह ठीक भी है।

- **संतान से जुड़ा कोई विषय** इस वर्ष अभी पूरी तरह खुलने वाला नहीं — उसके लिए अगले वर्ष तक प्रतीक्षा उचित रहेगी।

- **परिवार व रिश्तेदारों से कोई अनबन** (कलि सहम) की आशंका है — पर यह भाव 12 में है, अर्थात् यह बात बाहर नहीं आएगी; भीतर-ही-भीतर सँभल जाएगी।

पुण्य सहम — इस वर्ष की असली रीढ़

पुण्य सहम (कर्क 7°29') तीसरे भाव में है और इसके स्वामी चंद्र हैं। ताजिक में पुण्य सहम को "वर्ष की रीढ़" माना जाता है — यह बताता है कि इस वर्ष भाग्य और पुण्य किस रास्ते से आपका साथ देंगे। **चंद्र इस वर्ष-कुंडली में दूसरे भाव में हैं और उनका विंशोपक बल 11.3 — इस पूरी वर्ष-कुंडली में सबसे अधिक।** इसका अर्थ है कि **जब भी आप किसी से जुड़ेंगे, अपनी बात कहेंगे, यात्रा करेंगे या साहस दिखाएँगे — तभी भाग्य साथ देगा।** बैठे रहने से नहीं; हिलने से।

मुख्य बातें

- **यश और गौरव सहम वर्ष-लग्न में** — यह वर्ष नाम बनाने का है, अवसर आने पर पीछे मत हटिए।

- **कर्म और अर्थ सहम बुध के अधीन** — वाणी, लेखन व बुद्धि से ही इस वर्ष धन और करियर आगे बढ़ेगा।
- **चौथे भाव में आठ सहम** — घर और परिवार इस वर्ष का मुख्य केंद्र है; वहाँ की शांति ही बाहर की सफलता की नींव है।
- **बारहवें भाव के सहम** — संतान, गहरी पढ़ाई व कुछ विशेष इच्छाएँ अभी पृष्ठभूमि में हैं; उनके लिए अगले वर्ष का इंतज़ार करना उचित है।
- **पुण्य सहम के स्वामी चंद्र सबसे बलवान** — भाग्य का द्वार हिलने-डुलने, बोलने और जुड़ने से खुलेगा; एकांत में बंद रहने से नहीं।



मुद्दा दशा ~ महीने-वार चाल

अ ध्या य 6

मुद्दा दशा ~ महीने-वार चाल

इस वर्ष हर महीने का रंग अलग है — कोई महीना दौड़ने का, कोई थमने का, कोई बोलने का, कोई काटने का। ताजिक पद्धति में "मुद्दा दशा" वह मासिक धड़कन है जो बताती है कि किस समय कौन-सा ग्रह आपके 35वें वर्ष की बागडोर थामे हुए है। वर्षेश्वर बुध ने इस वर्ष की बड़ी दिशा तय की है, पर हर महीने का अनुभव मुद्दा दशा के स्वामी से रंगा होगा।

राहु मुद्दा — 15 जुलाई से 8 सितम्बर 2026

यह वर्ष का सबसे लंबा और सबसे उलझन भरा खंड था।

राहु की मुद्दा दशा लगभग दो महीने चली — और राहु स्वभाव से भ्रम, अचानक मोड़ और अति-महत्वाकांक्षा का ग्रह है। इस दौर में बड़े-बड़े विचार मन में आए होंगे, नई योजनाएँ बनीं होंगी, पर ज़मीन पर पकड़ थोड़ी ढीली रही होगी। राहु वर्ष-कुंडली के दसवें भाव में हैं — कर्म और यश का घर — इसलिए इस दौर में करियर से जुड़ी हलचल, कोई बड़ा निर्णय या नई जगह से संपर्क होना स्वाभाविक था। पर राहु वक्री भी हैं, इसलिए जो दिखा वह सब वैसा नहीं था जैसा लगा — थोड़ा धैर्य रखना ज़रूरी था।

यह खंड अब बीत चुका है। उसमें जो बोया, वह आगे के महीनों में उगेगा।

गुरु मुद्दा — 8 सितम्बर से 27 अक्टूबर 2026

यह वर्ष का सबसे शुभ और सबसे स्थिर खंड है — अभी यही समय चल रहा है।

गुरु वर्ष-कुंडली के तीसरे भाव में उच्च के हैं — साहस, पराक्रम और संचार का घर। उच्च का गुरु तीसरे भाव में होना यह कहता है कि इस दौर में आपके विचार, आपकी वाणी और आपका आत्मविश्वास अपने सबसे ऊँचे बिंदु पर है। **जो बात कहनी हो — कहिए। जो**

प्रस्ताव रखना हो — रखिए। जो कदम उठाना हो — उठाइए।

गुरु का विंशोपक बल 10.53 है — बली श्रेणी में। जन्म-कुंडली में गुरु लग्न में मित्र राशि में युवा अवस्था में हैं, यानी उनका फल इस मुद्दा-खंड में पूरी तरह उतर सकता है। पुण्य सहम और वणिक सहम — दोनों इस खंड से जुड़े भावों में हैं, जो बताते हैं कि भाग्य, लेन-देन और व्यापार से जुड़े काम इस समय सधेंगे।

जन्म-कुंडली में गुरु की दृष्टि पंचम, सप्तम और नवम पर पड़ रही है — इस मुद्दा-खंड में ये तीनों भाव भी जागृत होंगे: संतान, जीवनसाथी और भाग्य। **अक्टूबर 2026 के अंत से पहले जो काम करना हो, वह इसी खंड में करें — यह समय वर्ष का सबसे अनुकूल है।**

शनि मुद्दा — 27 अक्टूबर से 24 दिसम्बर 2026

यह खंड धैर्य माँगेगा — पर जो टिकेगा, वही जीतेगा।

शनि वर्ष-कुंडली के ग्यारहवें भाव में हैं — लाभ और इच्छापूर्ति का घर। यह अच्छी बात है। पर शनि का विंशोपक बल केवल 4.73 है — निर्बल श्रेणी में। हर्ष बल भी शून्य। यानी शनि इस वर्ष कमजोर स्थिति में हैं। लाभ का भाव शनि के हाथ में होने से इच्छाएँ तो होंगी, पर उनकी पूर्ति में देर और अतिरिक्त श्रम लगेगा।

इस दौर में जल्दी मत करिए। शॉर्टकट से बचिए। जो काम धीरे-धीरे, नियम से करेंगे — वह टिकेगा। शनि की मुद्दा में कानूनी, सरकारी या बड़े वित्तीय निर्णय लेने में सावधानी रखें। **बंधन सहम और जलपतन सहम दोनों दसवें भाव में शनि के स्वामित्व में हैं — इस खंड में अनावश्यक यात्रा और बड़े जोखिम से बचना बुद्धिमानी है।**

गोचर में शनि इस समय आठवें भाव में वक्री हैं (मीन, जन्म-लग्न से) और दिसम्बर 2026 में मार्गी होंगे — उसके बाद दबाव हल्का होगा।

बुध मुद्दा — 24 दिसम्बर 2026 से 14 फ़रवरी 2027

वर्षेश्वर स्वयं मुद्दा में आए — यह वर्ष का दूसरा सबसे महत्वपूर्ण खंड है।

बुध इस वर्ष के स्वामी हैं और अब मुद्दा दशा में भी आ गए। यह संयोग बहुत कम बार बनता है। बुध वर्ष-कुंडली के दूसरे भाव में स्वराशि में हैं — धन, वाणी और कुटुंब का घर। विंशोपक बल 12.51 — बली। कर्म सहम, अर्थ सहम और रोग सहम तीनों बुध के स्वामित्व में और दूसरे भाव में।

इस खंड में बातचीत, लेखन, अनुबंध, व्यापार-सौदे — ये सब अनुकूल हैं। धन से जुड़ा कोई काम जो पहले अटका हो, वह इस समय आगे बढ़ सकता है। पर बुध वक्री और अस्त भी हैं — इसलिए रद्द और कुत्थ योग का असर यहाँ भी दिखेगा। मतलब: काम बनते-बनते

अटकेगा, थोड़ी देर से ठीक होगा। घबराइए मत, बस दोबारा जाँचिए और आगे बढ़िए।

शुक्र व केतु मुद्दा — फ़रवरी से मई 2027

केतु की मुद्दा (14 फ़रवरी से 7 मार्च) एक छोटा पर अंतर्मुखी खंड होगा — मन भीतर की ओर खिंचेगा। यह एकांत और चिंतन का समय है, बड़े निर्णयों का नहीं।

शुक्र की मुद्दा (7 मार्च से 7 मई 2027) वर्ष का अंतिम बड़ा खंड है। शुक्र वर्ष-लप्रेष हैं और चौथे भाव में हैं — घर, सुख और आराम का भाव। **यश सहम, गौरव सहम वर्ष के पहले भाव में शुक्र के स्वामित्व में हैं — वर्ष के इस अंतिम चरण में नाम और सुख दोनों का अनुभव होने की संभावना है।** यह वर्ष की विदाई मीठी होगी।

मुख्य बातें

- गुरु मुद्दा (सितम्बर-अक्टूबर 2026) वर्ष का सर्वश्रेष्ठ खंड है — महत्वपूर्ण काम यहीं करें
- शनि मुद्दा (अक्टूबर-दिसम्बर) में धैर्य और नियम — जल्दबाज़ी से बचें
- बुध मुद्दा (दिसम्बर 2026-फ़रवरी 2027) दूसरा शुभ खंड — वाणी, व्यापार और धन के काम यहाँ सधेंगे
- केतु मुद्दा में एकांत और आराम लें — यह भीतरी तैयारी का समय है
- वर्ष शुक्र मुद्दा के साथ सुखद विदाई लेगा — गृह-सुख और सम्मान में वृद्धि



इस वर्ष हेतु उपाय व मार्गदर्शन

अ ध्या य 7

इस वर्ष हेतु उपाय व मार्गदर्शन

इस वर्ष का असली काम एक है — बुध को साधना। वर्षेश्वर बुध वक्री और अस्त हैं, मुंथा-पति भी वही हैं, और ताजिक के रद्द व दुरुफ योग इसी दबाव की ओर इशारा करते हैं। जो उपाय नीचे दिए हैं, वे इसी केंद्र से निकले हैं — आपकी इस वर्ष की कुंडली का अपना उत्तर।

पहले: बुध के साथ चलना — दिनचर्या से

बुध बुद्धि, वाणी, लेखन और निर्णय का ग्रह है। इस वर्ष वे दबे हुए हैं — इसका अर्थ यह नहीं कि आप चुप रहें; अर्थ यह है कि **बोलने से पहले सोचें, लिखने से पहले जाँचें।**

- **रोज़ सुबह 15-20 मिनट कुछ भी लिखें** — डायरी, योजना, विचार। बुध की वक्री अवस्था में मन भीतर घूमता रहता है; उसे कागज़ पर उतारने से निर्णय साफ़ होते हैं।
- **झूठ व अतिशयोक्ति से इस वर्ष विशेष बचें** — बुध की दशा में ये दोनों बहुत महँगे पड़ते हैं।
- **किसी एक विषय में नई चीज़ सीखें** — कोई भाषा, हिसाब, या अपने काम से जुड़ा कोई नया कौशल। बुध सीखने से प्रसन्न होता है।

दूसरा: सूर्य को जागृत रखें — आत्म-सम्मान बचाएँ

सूर्य की महादशा चल रही है, शनि की अंतर्दशा है, और वेशी योग सत्यनिष्ठा माँगता है। **इस वर्ष जहाँ भी आप स्वयं को छोटा मानकर चलें, वहीं सबसे बड़ा उपाय यह है कि मत मानें।**

- सूर्योदय के आसपास उठना और 10-15 मिनट धूप में बैठना — यह सबसे सरल और सबसे टिकाऊ सूर्य-उपाय है।
- घर में या काम पर कोई एक जिम्मेदारी ऐसी उठाएँ जिसमें आप **आगे** खड़े हों — सूर्य नेतृत्व से बढ़ता है।
- **माणिक** आपका जीवन-रत्न भी है और इस समय का सबसे उपयुक्त रत्न भी — यह सूर्य की दबी आवाज़ ऊपर लाता है। यदि धारण करना हो तो रविवार, सुबह, सोने या ताँबे में, अनामिका में।

तीसरा: शनि की अंतर्दशा में धैर्य ही उपाय है

फ़रवरी 2026 से फ़रवरी 2027 तक शनि की अंतर्दशा है। शनि आपके छठे भाव में स्वराशि में बैठे हैं — यह **हर्ष विपरीत राजयोग** है, अर्थात् कठिनाई के बाद ही उन्नति।

- **समय का पाबंद रहें** — यह एक आदत शनि की पूरी अंतर्दशा को सँभाल लेती है।
- किसी ज़रूरतमंद, बुजुर्ग या सेवक की सचमुच मदद करें — शनि सेवा से नरम होते हैं।
- शॉर्टकट इस वर्ष बिल्कुल नहीं — जो भी करें, नियम से करें।

चौथा: चतुर्थ भाव — घर व मन को सँभालें

इस वर्ष वर्ष-कुंडली के चौथे भाव में शुक्र, केतु और कई सहम (आशा, प्रीति, परदेश, व्यापार) एकत्र हैं। **घर के भीतर सम्बंध सँवारना इस वर्ष का सबसे गहरा उपाय है।**

- घर की साफ़-सफ़ाई व व्यवस्था पर ध्यान दें — वातावरण मन को सीधे छूता है।
- परिवार के किसी बड़े से — माता या किसी बुजुर्ग से — नियमित बात करें।

मुख्य बातें

- **बुध को सार्धे** — रोज़ लिखें, सोचकर बोलें, कुछ नया सीखें
- **सूर्य को जगाएँ** — सुबह धूप, आत्म-सम्मान, एक नेतृत्व की भूमिका
- **माणिक** इस समय के लिए सबसे उपयुक्त रत्न है — जीवन-रत्न भी यही है
- **शनि की अंतर्दशा में समय की पाबंदी और सेवा** — यही सबसे बड़ा कवच है
- **घर के सम्बंध सँवारें** — यह वर्ष भीतर की नींव पक्की करने का है

॥ शास्त्र-प्रमाण ॥

यस्य यश्च यदा दुःस्थः स तं यत्नेन पूजयेत् ।

एषां धात्रा वरो दत्तः पूजिताः पूजयिष्यथ ॥

जिसका जो ग्रह पीड़ित हो, वह यत्नपूर्वक उसकी उपासना करे। ब्रह्मा ने ग्रहों को वर दिया है — "पूजित होकर तुम भी पूजक का मान रखोगे।"

— बृहत् पाराशर होरा शास्त्र, अध्याय ८४



विंशोत्तरी दशा व गोचर से मिलान

अ ध्या य ८

विंशोत्तरी दशा व गोचर से मिलान

अभय शर्मा जी, ताजिक वर्षफल एक नक्शा है — और विंशोत्तरी दशा व गोचर वह ज़मीन है जिस पर चलना है। दोनों जब एक ही दिशा में इशारा करें, तब फल पक्का; जब अलग-अलग कहें, तब मिश्रित।

दशा क्या कह रही है

इस समय **सूर्य महादशा / शनि अंतर्दशा** चल रही है — फ़रवरी 2026 से फ़रवरी 2027 तक। सूर्य आपके लग्नेश हैं, पर अवस्था मृत है — यानी स्वयं का भाव तो है, पर आवाज़ धीमी है। शनि षष्ठ भाव में स्वराशि मकर में वक्री हैं — सप्तमेश और अष्टमेश, कुमार अवस्था। यह दशा श्रम, धैर्य और कभी-कभी अटकन की दशा है। **बड़े निर्णय देर से पकते हैं, पर जो टिकता है वह टिकाऊ होता है।**

ताजिक कर्म सहम और अर्थ सहम — दोनों द्वितीय भाव में बुध के स्वामित्व में हैं। बुध वर्षेश भी हैं। यह मिलान बताता है कि धन और काम दोनों इसी दशा के दबाव में हैं — और बुध वक्री-अस्त होने से थोड़ा रुका हुआ भाव रहेगा।

गोचर क्या जोड़ रहा है

गोचर में **गुरु अभी कर्क राशि में** — आपके जन्म-लग्न से बारहवें भाव में — 31 अक्टूबर 2026 तक। यह थोड़ा भीतर की ओर खींचने वाला समय है, बाहरी विस्तार इस क्षण कम। पर **नवंबर 2026 के बाद गुरु सिंह में आएंगे** — तब जन्म-लग्न पर सीधे विराजेंगे, और यही आपके इस वर्ष का सबसे बड़ा मोड़ है। गुरु की दृष्टि तब पंचम, सप्तम व नवम पर पड़ेगी — संतान, विवाह व भाग्य तीनों पर एक साथ।

शनि वक्री मीन में आपके अष्टम भाव में हैं — दिसंबर 2026 तक। धैर्य की परीक्षा जारी है।

योगिनी और दशा का मिलान

योगिनी भद्रिका (बुध) चल रही है — वर्षेश भी बुध। यह मिलान होता, पर विंशोत्तरी में शनि अंतर्दशा है, इसलिए संकेत **मिश्रित** हैं। वाणी और बुद्धि से काम आगे बढ़ेगा, पर शनि की धीमी चाल रोकेंगी भी।

मुख्य बातें

- **फ़रवरी 2027 से** सूर्य-बुध अंतर्दशा — बुध वर्षेश भी, तब दोनों पद्धतियाँ एक दिशा में
- गुरु का सिंह में आना (नवंबर 2026) — इस वर्ष का सबसे शुभ गोचर-मोड़
- शनि अष्टम में वक्री — दिसंबर 2026 तक धैर्य ज़रूरी
- दोनों पद्धतियाँ अभी मिश्रित — बड़े दावे नहीं, सधा हुआ प्रयास ही काम आएगा



इस वर्ष का निचोड़

अ ध्या य 9

अभय शर्मा जी, यह वर्ष एक शब्द में कहूँ तो — यह वर्ष भीतर से पकने का है, बाहर से चमकने का नहीं। बुध ने इस वर्ष की बागडोर थामी है, मुंथा उनके ही घर में है, और सारे बड़े सहम उन्हीं की ओर इशारा कर रहे हैं — पर बुध स्वयं वक्री और अस्त हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि वर्ष बुरा है; अर्थ यह है कि इस वर्ष की शक्ति भीतर छिपी है, बाहर नहीं — और जो उसे पहचान ले, उसके लिए यह वर्ष बहुत कुछ देकर जाएगा।

धन, वाणी और काम — तीनों एक ही धुरी पर टिके हैं इस वर्ष। जो बोलेंगे सोच-समझकर, जो लिखेंगे साफ़ मन से, जो निर्णय लेंगे जल्दबाज़ी छोड़कर — वही आगे बढ़ेगा। सूर्य और बुध का इत्थशाल बिल्कुल निकट पड़ा है, मात्र पाव अंश का अंतर — इसका मतलब है कि कोई बड़ी बात, कोई अहम प्रस्ताव, कोई निर्णय इस वर्ष के दरवाज़े तक आएगा ज़रूर। पर रद्द और गैरकंबूल का साथ यह बताता है कि वह बात अपने आप मुकम्मल नहीं होगी — उसे आपको ही पूरा करना होगा, और मन में यह भाव भी रह सकता है कि "जितना चाहा था उतना नहीं हुआ।" यह निराशा नहीं, यह इस वर्ष का स्वभाव है।

अक्टूबर के अंत तक गुरु की मुद्रा दशा चलेगी — यह समय अभी है, और यही इस पूरे वर्ष का सबसे खुला और सबसे शुभ खंड है। जो कहना है, जो कदम उठाना है — वह अक्टूबर 2026 के अंत से पहले करिए। उसके बाद शनि की मुद्रा दशा आएगी — दिसंबर 2026 तक — और तब धैर्य और नियम ही काम आएंगे, उत्साह नहीं।

घर, परिवार और मन की शांति इस वर्ष सबसे बड़ी पूँजी है। यश और गौरव के सहम वर्ष-लग्न में हैं — नाम होगा, पर उसके लिए खुद को आगे रखना होगा। जो मंच मिले, उसे मत छोड़िए।

और एक बात — फ़रवरी 2027 से बुध की अंतर्दशा आएगी, योगिनी में भी भद्रिका बुध का ही राज है — तब जो इस वर्ष भीतर पका होगा, वह बाहर आना शुरू होगा। तब तक जो आज का श्रम है, वह उसी की नींव है।

आपकी सबसे बड़ी शक्ति इस वर्ष आपकी वाणी है — उसे सच्चा रखिए, सधा रखिए, और समय आने पर निडर होकर बोलिए।

॥ ॐ शुभम् ॥

❖ ParasVani · पारस वाणी ❖ ताजिक वर्षफल रिपोर्ट ❖ अभय शर्मा (काल्पनिक) ❖

यह AI-सहायित वैदिक विश्लेषण मार्गदर्शन हेतु है — निर्णय अपने विवेक से लें।